Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# RAJASTHAN - CET

## स्नातक स्तर

## समान पात्रता परीक्षा

### भाग – 1

## राजस्थान का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

# विषयसूची


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 1 | राजस्थान और 1857 का विद्रोह | 1 |
| 2 | राजस्थान में जनजातीय आंदोलन | 7 |
| 3 | राजस्थान में किसान आंदोलन | 11 |
| 4 | राजस्थान में राजनीतिक जागृति | 19 |
| 5 | प्रजामंडल आंदोलन | 27 |
| 6 | राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग | 36 |
| 7 | राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति | 47 |
| 8 | मेवाड़ का इतिहास | 51 |
| 9 | राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास | 67 |
| 10 | गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश | 79 |
| 11 | चौहानों का इतिहास | 82 |
| 12 | आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश) | 96 |
| 13 | जैसलमेर का भाटी वंश | 106 |
| 14 | करौली-भरतपुर का इतिहास | 109 |
| 15 | राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला | 111 |
| 16 | राजस्थान की चित्रकला | 130 |
| 17 | राजस्थान के हस्तशिल्प | 141 |
| 18 | राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ | 147 |
| 19 | राजस्थान के मेले और त्योहार | 152 |
| 20 | राजस्थान के प्रसिद्ध लोक गीत | 161 |
| 21 | राजस्थान के लोक नृत्य | 173 |
| 22 | राजस्थान के संत और लोक देवी - देवता | 181 |
| 23 | प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व | 196 |

# विषयसूची


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 24 | राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण | 211 |
| 25 | राजस्थान का सामान्य परिचय | 219 |
| 26 | राजस्थान का भौतिकीय स्वरुप | 223 |
| 27 | नवीनतम संभाग एवं जिला परिदृश्य | 226 |
| 28 | राजस्थान का भौगोलिक विभाजन प्रदेश | 243 |
| 29 | जलवायु | 253 |
| 30 | जल संसाधन | 264 |
| 31 | राजस्थान में वनस्पति (वन) | 286 |
| 32 | मृदा | 291 |
| 33 | कृषि | 295 |
| 34 | जनसंख्या परिदृश्य | 304 |
| 35 | राजस्थान की प्रमुख जनजाति | 307 |
| 36 | खनिज तत्व | 315 |
| 37 | ऊर्जा संसाधन | 332 |
| 38 | परिवहन | 341 |

# 1 CHAPTER राजस्थान और 1857 का विद्रोह

- **1832** - एजेंट टू गवर्नर-जनरल' (**एजीजी**) **हेडक्वार्टर अजमेर** में स्थापित किया गया।
  - राजस्थान के **पहले** एजेंट टू गवर्नर-जनरल' (**एजीजी**) - श्री लोकेट।
- **1845** - एजीजी **हेडक्वार्टर** "**आबू**" स्थानांतरित कर दिया गया।
- **1857** - **जॉर्ज पैट्रिक** लॉरेन्स राजस्थान के एजीजी थे।
- 1857 - राजस्थान के कई **राजपूत ब्रिटिश** सरकार के **खिलाफ़** थे।
- अंग्रेजी शासन के प्रति **असंतुष्टि** जिससे इनके मन में सरकार के खिलाफ़ **क्रांति** के बीज उत्पन्न होने लगे।
  - इन लोगों के साथ **आम जनता** भी शामिल हो गई।
- राजस्थान के कई इलाकों में इस विद्रोह की ज्वाला भड़की थी जिनमें निम्न नाम उल्लेखनीय हैं **(RAS PRE 2012)**

| क्र.स. | छावनी | मुख्यालय | रेजीमेन्ट |
|---|---|---|---|
| 1. | नसीराबाद | अजमेर | 15वीं बंगाल नैटिव इन्फेन्ट्री |
| 2. | नीमच | ग्वालियर | मालवा, मेवाड़ राजपूताना रेजीमेंट |
| 3. | एरिनपुरा | पाली | जोधपुर लीजियन |
| 4. | देवली | टोंक | कोटा कन्टिन्जेन्ट |
| 5. | ब्यावर | अजमेर | मेर रेजीमेन्ट |
| 6. | खैरवाड़ा | उदयपुर | भील रेजीमेन्ट |

## राजस्थान में 1857 की क्रांति के कारण

**1. कम्पनी का राज्यों के आन्तरिक शासन में हस्तक्षेप**
- संधि पत्र की शर्तों का उल्लंघन कर राज्यों के आन्तरिक प्रशासन में हस्तक्षेप करना ।
- जैसे 1839 ई . में जोधपुर के किले पर अधिकार, मांगरोल के युद्ध में कोटा महाराव के विरूद्ध दीवान जालिम सिंह की मदद, मेवाड़ प्रशासन में बार – बार हस्तक्षेप आदि।
- अंग्रेजों ने राजाओं की प्रभुसत्ता समाप्त कर, उन्हें अपनी कृपा दृष्टि पर निर्भर बना दिया।

**2. राज्यों में उत्तराधिकार के प्रश्न पर असंतोष**
- निःसंतान राजाओं द्वारा गोद लेने संबंधी मामलों में कम्पनी ने अपना निर्णय देशी रियासतों पर लादने की कोशिश की।
- जिसमें 1826 ई. में अलवर राज्य में हस्तक्षेप कर अलवर राज्य को दो हिस्सों में बाँट दिया।
- 1826 ई. में भरतपुर के लोहागढ़ दुर्ग को नष्ट कर पॉलिटिकल ऐजेन्ट के अधीन काउन्सिल की नियुक्ति।
- 1844 ई. में बाँसवाड़ा महारावल लक्ष्मणसिंह की नाबालिगी के कारण अंग्रेजी नियन्त्रण की स्थापना।

**3. सामान्य जनता की भावना**
- राजस्थान में सामान्य जनता की भावना अंग्रेजों के विरुद्ध चरम पर थी।
- अंग्रेजों की अपनी धर्म प्रचार नीति, सामाजिक सुधार एवं आर्थिक नीतियों को यहाँ की जनता ने अपने धर्म व जीवन में अंग्रेजों द्वारा हस्तक्षेप की संज्ञा दी।
- डूंगजी, जवाहरजी एवं लोठू जाट द्वारा नसीराबाद की सैनिक छावनी को लूटना आम जनता में बहुत ही प्रसन्नता का कारण बना।

**4. राज्यों के आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप**
- अंग्रेज कम्पनी ने राज्यों के साथ **खिराज वसूलने की प्रथा द्वारा** आर्थिक शोषण की नीति लागू कर दी।
- इसके अतिरिक्त राज्यों में शांति व्यवस्था के नाम पर धन वसूली की गई ।
- 1822 ई. में मेरवाड़ा बटालियन की स्थापना, 1834 ई. में शेखावटी ब्रिगेड की स्थापना, 1835 ई. में जोधपुर लीजियन का गठन, 1841 ई. में मेवाड़ भील कोर की स्थापना कर कम्पनी द्वारा इन सभी बटालियन के रख – रखाव का खर्चा भी संबंधित राज्यों से वसूल किया गया।

**5. सामन्तों की मनोदशा**
- 1818 ई. की संधियों के पूर्व तक शासक को मुख्यतः सामन्तों पर ही निर्भर रहना पड़ता था।
- अतः संधि के पश्चात सामन्तों पर उनकी निर्भरता प्रायः समाप्त हो गई।
- सामन्त अपनी दुःखद स्थिति का उत्तरदायी मुख्यतः अंग्रेजों को ही मानते थे।
- अतः उनमें रोष बढ़ता गया आउवा, कोठारिया और सलूम्बर ठिकाने इसके उदाहरण हैं।

**6. तात्कालिक कारण**

- भारत में 1857 ई. की क्रांति का तात्कालिक कारण **एनफील्ड राइफलों में प्रयुक्त कारतूसों में गाय एवं सूअर की चर्बी का प्रयोग किया जाना** था।
- जिन्हें प्रयोग में लेने से पहले मुँह से खोलना पड़ता था।

## राजस्थान में 1857 क्रांति का प्रारम्भ/घटनाक्रम

- 1857 ई. की क्रांति की शुरुआत मेरठ में 10 मई, 1857 को हुई।
- इस समय मेवाड़, मारवाड़ एवं जयपुर में क्रमशः मेजर शावर्स, मॉक मैसन और कर्नल ईडन पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त थे।
- ये सभी राजस्थान के तत्कालीन ए.जी.जी. ( एजेन्ट टू गवर्नर जनरल ) **जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स** के अधीन थे।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के समय **छः सैनिक छावनियाँ** थीं।

### नसीराबाद (28 मई, 1857)

- विद्रोह की सबसे **पहली शुरूआत** नसीराबाद से हुई थी।
- **कारण**
  - ब्रिटिश सरकार ने अजमेर की **15वीं बंगाल इन्फ़ेन्ट्री** को **नसीराबाद** भेज दिया था क्योंकि सरकार को इस पर **विश्वास नहीं** था।
    - इससे सभी **सैनिक नाराज** हो गये।
    - उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ **क्रांति** का **आगाज** कर दिया।
  - ब्रिटिश सरकार ने **बम्बई के सैनिकों** को **नसीराबाद** में बुलवाया और पूरी सेना की जांच पड़ताल करने को कहा।
  - ब्रिटिश सरकार ने नसीराबाद में कई तोपें तैयार करवाई।
    - इससे भी नसीराबाद के सैनिक नाराज हो गये और उन्होंने विद्रोह कर दिया।
- मेजर **स्फोटिस वुड एवं न्यूबरी की हत्या** कर सैनिकों ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।
- नसीराबाद का सैनिक अधिकारी प्रिचार्ड जान बचाकर भागा।
  - उनकी सम्पत्ति को भी नष्ट कर दिया।
- इन सैनिकों के साथ अन्य लोग भी शामिल हो गये।

### नीमच (3 जून, 1857)

- **मोहम्मद अली बेग** नामक सैनिक ने कर्नल एबट के सामने ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी की शपथ लेने से इनकार कर दिया।
- नसीराबाद की खबर मिलते ही **3 जून, 1857 को नीमच के विद्रोहियों ने हीरासिंह के नेतृत्व** में कई अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया।
  - नीमच का सैनिक अधिकारी एबोट जान बचाकर भागा।
  - फ़लस्वरूप अंग्रेजों ने भी बदला लेने की योजना बनाई।
- उन्होंने 7 जून को नीमच पर अपना अधिकार कर लिया।
  - विद्रोही सैनिक चित्तौड़ , हमीरगढ़ , बनेड़ा में अंग्रेजी बंगलों को लूटते हुए शाहपुरा पहुँचे। शाहपुरा के जागीरदार ने विद्रोही सैनिकों के लिए रसद की आपूर्ति की।
  - नीमच में क्रांति की सूचना पाते ही शावर्स ने मेवाड़ की एक पलटन को क्रांतिकारियों को निकालने भेजा और स्वयं नीमच की ओर बढ़ा।
  - शावर्स ने कोटा, बूँदी तथा मेवाड़ की सेनाओं की सहायता से नीमच पर पुनः अधिकार कर लिया।

### देवली (टोंक)

- 5 जून 1857 को नीमच के सैनिकों ने विद्रोह किया।

### एरिनपुर (जोधपुर)

- 21 अगस्त, 1857 ई. को एरिनपुरा में राजा **तख्त सिंह** के खिलाफ़ विद्रोह प्रारंभ हो गया।
- जोधपुर लीजियन के **मोती खाँ, सूबेदार शीतल प्रसाद एवं तिलक राम के नेतृत्व** में विद्रोह का बिगुल बजा दिया।
- वे क्रांति के नेताओं के आदेशानुसार "**चलो दिल्ली**" '**मारो फिरंगी**' के नारे लगाते हुए दिल्ली की ओर चल पड़े।
- **आउवा का ठाकुर कुशाल सिंह** इन सैनिकों से मिला और इन्हें अपने साथ आउवा ले गया।

**आउवा में विद्रोह-** आउवा में क्रान्ति का नेतृत्व ठाकुर कुशालसिंह चम्पावत द्वारा किया गया।

- **बिथौड़ा (पाली) का युद्ध - 8 सितम्बर**
  - कुशाल सिंह चम्पावत और लेफ़्टिनेंट हीथकोट + कुशल राज सिंघवी के मध्य
  - कुशाल सिंह ने इन को परास्त कर दिया।
  - जोधपुर का **ओनाड़ सिंह पंवार** इस युद्ध में लड़ते हुए मारा गया
- **चेलावास की लड़ाई - 18 सितम्बर**
  - जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस+ मैकमेसन और कुशाल सिंह चम्पावत के मध्य
  - कुशल सिंह विजयी।
  - मैकमेसन को मारकर उसके सिर को आउआ के किले के दरवाजे पर लटका दिया।
  - इसे "**काले और गोरों की लड़ाई**" भी कहा जाता है
- कर्नल होम्स आऊआ से सुगाली माता की मूर्ति उठाकर ले गया जिसे अजमेर के राजपुताना म्यूजियम में रखा, वर्तमान में यह मूर्ति पाली के बांगड़ म्यूजियम में है।
- **आऊआ का युद्ध -( 20 जनवरी, 1858)**
  - कर्नल होम्स और हंसराज जोशी (जोधपुर) ने आउवा पर आक्रमण किया ।
  - 24 जनवरी, 1858 को दुर्ग पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया।
  - आउवा के ठाकुर कुशालसिंह ने **कोठारिया के रावल जोधसिंह के यहाँ जाकर शरण** ली।
  - अन्ततः इन्होंने **8 अगस्त, 1860** को अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
  - मेजर टेलर की अध्यक्षता में गठित जाँच आयोग ने जाँच-पड़ताल कर उनको 10 नवम्बर, 1860 को रिहा कर दिया गया।
  - ठाकुर कुशाल सिंह उदयपुर की ओर कुछ दिन पहाड़ों में घूमते रहे, जहाँ सलूम्बर के रावल केसरसिंह चूंडावत ने उनकी मदद की।
  - 1864 में उदयपुर में ही इनका स्वर्गवास हो गया।

### मेवाड़

- मेवाड़ के सामंत ब्रितानियों व महाराणा से नाराज थे।
- इन सामन्तों में आपसी फूट भी थी ।
- महाराणा ने मेवाड़ के सामन्तों को ब्रितानियों की सहायता करने की आज्ञा दी।
- इसी समय सलूम्बर के रावत केसरी सिंह ने उदयपुर के महाराणा को चेतावनी दी कि यदि आठ दिन में उनके परम्पराग़त अधिकार को स्वीकार न किया गया तो वह उनके प्रतिद्वंदी को मेवाड़ का शासक बना देंगे।
- सलूम्बर के रावत केसरी सिंह ने आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह को अपने यहा यहा शरण दी।
- इसी समय तात्या टोपे ने राजपूताने की ओर कूच किया।

- 1859 में नरवर के मानसिंह ने उसके साथ धोखा किया और उसे गिरफ़्तार कर लिया।
- यद्यपि सामंतों ने प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश सरकार का विद्रोह नहीं किया परन्तु विद्रोहियों को शरण देकर इस क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## कोटा में जन विद्रोह

- क्रांति के समय कोटा का शासक **महाराव रामसिंह द्वितीय (1827-1865 ई.**) था।
- एकमात्र यहीं पर सैनिक छावनी न होते हुये भी जनता ने विद्रोह किया और छः माह तक जनता का शासन रहा।
- राजस्थान में सर्वप्रथम यही पर जनता द्वारा कोतवाली पर तिरंगा फहराया गया।
- यहाँ 15 अक्टूबर, 1857 ई. को **मेहराब खाँ (रिसालदार) व जयदयाल (वकील) के नेतृत्व** में राज्य की सेना व जनता ने विद्रोह कर **मेजर बर्टन व सर्जन सेल्डर कोटम** की हत्या कर दी गई तथा **बर्टन का सिर काटकर** शहर में घुमाया गया।
- मेहराब खाँ (करौली) और जयदयाल (मथुरा) राज्य की सत्ता अपने हाथ में ले ली।
- जनवरी, 1858 में **करौली** के **महारावल मदनपाल की सेना** ने आकर कोटा महाराव को क्रांतिकारियों की नजरबंदी से मुक्त करवाया।
- **जयदयाल और मेहराब खाँ** को कोटा एजेंसी भवन के पास नीम के पेड़ पर फाँसी दे दी गई।
- मेजर बर्टन की हत्या में कोटा महाराव की लिप्तता की **जाँच हेतु लॉर्ड रॉबर्ट की अध्यक्षता में एक आयोग** गठित हुआ।
- जिसमें बर्टन की हत्या में कोटा महाराव की लिप्तता सिद्ध नहीं हो पाई परन्तु उन्हें इसके लिए उत्तरदायी ठहराया गया।
- इस विद्रोह का दमन **मेजर रॉबर्टस ने मार्च, 1858** ई. में किया।

# राज्य के अन्य क्षेत्रों में विद्रोह

## टोंक विद्रोह

- उस समय टोंक का नवाब वजीरूदौला था।
  - अंग्रेजों का साथ दिया।
  - मीर आलम खाँ ने विद्रोहियों का साथ दिया ।
- तात्या टोपे के टोंक आने पर क्रांतिकारी उनके साथ हो गये।
  - अमीरगढ़ के किले के निकट नवाब की सेना को पराजित कर क्रांतिकारियों ने तोपखाने पर अधिकार कर लिया।
- जयपुर के पॉलिटिकल एजेंट ईडन ने टोंक को क्रांतिकारियों से मुक्त करवाया।
- टोंक विद्रोह में औरतों ने भी हिस्सा लिया।

## धौलपुर विद्रोह

- धौलपुर का विद्रोह (27 अक्टूबर, 1857 )
- यहाँ की जनता ने **देवा गुर्जर, रामचन्द्र व हीरालाल राणा** के नेतृत्व में विद्रोह कर धौलपुर पर अधिकार कर लिया।
- जिसे दो माह बाद पटियाला नरेश ने वहाँ के राजा भगवंत सिंह को आजाद करवाया।

## भरतपुर विद्रोह

- गुर्जर और मेव समाज ने वहाँ विद्रोह किया।
- राजा जसवंत सिंह ने पॉलिटिकल एजेंट मोरिसन को भरतपुर छोड़ने की सलाह दी।

## अलवर विद्रोह

- राजा विनयसिंह (बन्ने सिंह) ने अंग्रेजों का साथ दिया, लेकिन उनके **दीवान फज़ल खान** ने विद्रोहियों का समर्थन किया।
- विनयसिंह की मृत्यु के बाद **शिवदान सिंह ने** आगरा के किले में घिरे अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों की सहायता के लिए अपनी सेना और तोपखाने भेजा।

## जयपुर विद्रोह

- **विद्रोही**
  - उस्मान खान
  - विलायत खान
  - सादुल्ला खान
- जयपुर का राजा रामसिंह द्वितीय ने अंग्रेजों की तन-मन-धन से सहायता की।
- बदले में अंग्रेजों ने इनको **'सितार-ए-हिन्द'** की उपाधि व **कोटपुतली परगना** बख्सीस में दिया।
- यहाँ का पॉलिटिकल एजेन्ट 'कर्नल ईडन' था।
- पॉलिटिकल एजेंट ईडन की सलाह पर राजा रामसिंह द्वितीय ने विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया।

## बीकानेर विद्रोह

- बीकानेर के सरदार सिंह एकमात्र ऐसे शासक थे जिन्होंने अपने क्षेत्राधिकार के बाहर भी अंग्रेजों का साथ दिया व **बाड़लू नामक स्थान** पर विद्रोहियों को पराजित किया।
- अंग्रेजों ने उसे टिब्बी परगना (हनुमानगढ़) 41 गाँव इनाम में दिए।

## तात्या टोपे का राजस्थान आगमन

- मूल नाम - रामचंद्र पांडुरंग
- 1857 की क्रांति में ग्वालियर का विद्रोही नेता।

केट्टन शावर्स- इतिहास में तांत्या तोपे को फाँसी देना ब्रिटिश सरकार का अपराध समझा जायेगा और आने वाली पीढ़ी पूछेगी कि इस सजा के लिए किसने स्वीकृति दी और किसने पुष्टि की ?"

- उद्देश्य - राजस्थान से सैन्य सहायता प्राप्त करना।
- सर्वप्रथम 8 अगस्त, 1857 को **मांडलगढ़ से भीलवाड़ा** आया।
- 9 अगस्त, 1857 को कुआड़ा नामक स्थान पर जनरल रॉबर्टस की सेना ने तात्या टोपे को पराजित किया।
- कोठारिया के ठाकुर जोधसिंह ने तात्या टोपे को रसद सामग्री उपलब्ध करवाई।
- वह सेना सहित झालावाड़ पहुँचा जहाँ के शासक पृथ्वीसिंह ने उनके विरूद्ध सेना भेजी जो क्रांतिकारियों से पराजित हुई।
  - क्रांतिकारियों ने **झालावाड़ पर अधिकार** कर लिया।
- तात्या टोपे वापस ग्वालियर चले गये।
  - पुनः मेवाड़ आये तथा 11 दिसम्बर, 1857 को **बाँसवाड़ा पर अधिकार** कर लिया।
- यहाँ से तात्या टोपे प्रतापगढ़ पहुँचे जहाँ मेजर रॉक की सेना ने उन्हें पराजित किया।
- यहाँ से वे **सलूम्बर(रावत केसरी सिंह द्वारा रसद सामग्री उपलब्ध करायी) व भिंडर** होते हुए जनवरी 1858 में बांदा के नवाब के साथ **टोंक** पहुँचे।
- तात्या टोपे की सेना ने टोंक के तोपखाने पर अधिकार कर अपने शासन की घोषणा कर दी।

- इसकी सूचना मिलते ही टोंक के मेजर ईडन सेना लेकर आये और क्रन्तिकारी नाथद्वारा की ओर चले गये।
- नरवर के जागीरदार **मानसिंह नरूका की सहायता से अंग्रेजों ने** नरवर के जंगलों में तात्या टोपे को पकड़ लिया।
    - **18 अप्रैल, 1859 को उन्हें सिप्री (शिवपुरी)** में फांसी दे दी गई।

**लोठू /लोटिया जाट व करणा मीणा**

- सीकर के रिंगस गाँव में एक साधारण जाट किसान परिवार में इनका जन्म सन् 1804 में हुआ।
- लोठू जाट ने क्रान्तिकारियों की सेना बनाई जिसका मकसद अंग्रेजों से आजादी थी।
- लोठु जाट स्वयं स्वांग रचकर जासूसी करते थे। इसलिए इनके आगरा पर हमला, किलों की छानबीन, नसीराबाद छावनी पर हमला आदि सफल रहे।
- दिसम्बर, 1846 में आगरा किले पर हमला कर क्रान्तिकारी डूंगरसिंह सहित 300 क्रान्तिकारियों को मुक्त कराया।
- डूंगरसिंह के साथ नसीराबाद छावनी को लूटा और लूट का माल जनता में बाँट दिया।
- करणा मीणा लोटिया का मित्र था ।

## डूँगरजी -जवाहरजी (सीकर) **(RAS MAINS 2018)**

- 1857 के संग्राम के समय **सीकर क्षेत्र में काका भतीजा डूँगरजी - जवाहरजी** प्रसिद्ध देशभक्त हुए।
- इन्होंने छापामार लड़ाइयों से अंग्रेजों को परेशान किया तथा वे **धनी लोगों से धन लूटकर गरीबों में बाँटते** थे।
- कई बार अंग्रेज छावनियों को भी लूटा।
- अंग्रेजों द्वारा डूँगरजी को आगरा के किले में कैद कर लिया गया था जिन्हें जवाहरजी ने **लोटिया जाट तथा करणिया मीणा** की सहायता से छुड़वाया।
- बीकानेर में अंग्रेजी सेना ने डूंगजी- जवाहरजी को घेर लिया जिसके पश्चात डूँगरजी जैसलमेर तथा जवाहरजी भागकर बीकानेर चले गये।
- डूँगरजी जी और जवाहरजी ने **बीकानेर और जोधपुर सेना** के विरुद्ध संघर्ष किया तथा अंत में जोधपुर में मारे गये।

**अमरचंद बाठिया**

- मूलरूप से बीकानेर निवासी ।
- 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में फाँसी पर लटकने वाला प्रथम क्रान्तिकारी ।
- ग्वालियर में अपना कारोबार करता था।
- 1857 की क्रांति में ग्वालियर में झाँसी की राणी की वित्तीय सहायता की ।
- ये जनमानस में दूसरा भामाशाह कहलाये ।

## राजस्थान में 1857 क्रांति का स्वरुप / प्रकृति

- राजस्थान में 1857 के संग्राम का स्वरूप अधिकांशतः देशव्यापी विप्लव के ही समान था।
- लेकिन राजस्थान की विशिष्ट परिस्थितियों के कारण संग्राम के स्वरूप में परिवर्तन भी दृष्टिगोचर होता है।
- महत्त्वपूर्ण बात यह है कि राजस्थान में संग्राम का सूत्रपात सैनिकों ने किया और प्रत्येक जगह सैनिकों ने ही इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई फिर भी, इसे मात्र एक सैनिक विद्रोह नहीं कहा जा सकता है।
- जैसा कि नसीराबाद छावनी के एक सैनिक अधिकारी कैप्टन आई.टी. प्रिचार्ड ने अपनी पुस्तक "**म्यूटिनीज इन राजपूताना**" में लिखा "राजस्थान में विप्लव का सूत्रपात नसीराबाद में सैनिक विद्रोह के रूप में हुआ था परन्तु, बाद में जब इसका फैलाव प्रान्त के अन्य स्थानों में हुआ उस समय इसके स्वरूप में परिवर्तन आने लगा था।"

| | |
|---|---|
| **'स्वतंत्रता संग्राम' के रूप में** | • हाड़ौती अंचल के प्रसिद्ध कवि एवं लेखक सूर्यमल्ल मिश्रण, ने 'गदर' या सैनिक विद्रोह नहीं मानकर इसे स्वतंत्रता संग्राम माना है।<br>• जनसाधारण अंग्रेजों से नाराज था और उनसे छुटकारा पाना चाहता था इसलिए गुप्त संगठन बनाकर अंग्रेजों की सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए आतुर था।<br>• समकालीन व विप्लव के कुछ समय बाद लिखे गए लोकगीत लोगों के मन में अंग्रेज विरोधी प्रबल भावना को प्रकट करते हैं। वे देश को अंग्रेजों के प्रभुत्व से मुक्त होने की आकांक्षा रखते थे।<br>• उनके मन में फिगियों के प्रति नाराजगी व घृणा की भावना प्रबल थी।<br>• आउवा, टोंक और कोटा में अंग्रेज विरोधी अभियान में आम जनता ने खुलकर विप्लवकारियों को सहयोग दिया था।<br>• अतः 1857 ई. के विप्लव को स्वतंत्रता संग्राम माना जा सकता है।<br>• सैनिकों, जागीरदारों एवं जनता का एक ही उद्देश्य था, अंग्रेजों व अंग्रेजी शासन का अंत व परम्परागत शासन की पुनर्स्थापना । |
| **सामन्तों के विद्रोह के रूप में** | • सामंत वर्ग अपनी दीन-हीन स्थिति के लिए अंग्रेजी शासन को जिम्मेदार मानते थे।<br>• अंग्रेजी संरक्षण प्राप्त हो जाने के कारण शासकों को उनकी परवाह नहीं थी और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने पर सैन्य शक्ति से उनको दबाया जाता था।<br>• इन सब कारणों से उनके मन में अंग्रेजों के प्रति आक्रोश था। अतः 1857 ई. के विप्लव के समय विद्रोही सामन्तों ने अंग्रेज विरोधी अभियान को नेतृत्व प्रदान किया।<br>• यद्यपि विप्लव के दौरान सामन्तों ने अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर अंग्रेज विरोधी अभियान में भाग लिया था।<br>• तथापि इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि उनमें देशप्रेम की भावना विद्यमान थी, जिसका उन्होंने प्रदर्शन किया।<br>• यदि विप्लव को मात्र सामंतशाही की रक्षार्थ निजी हितों के लिए संघर्ष माना जाए तो लोकगीत और चारण कवियों द्वारा उन सामन्तों की प्रशंसा नहीं की जाती,<br>• लोकगीतों में आउवा के संघर्ष को काले-गोरों का झगड़ा माना गया है ।<br>• इसी प्रकार मेवाड़ के सामन्त भी महाराजा स्वरूपसिंह से नाराज थे, तो उन्होंने विप्लवकारियों को शरण एवं सहयोग क्यों दिया था और क्यों अंग्रेज विरोधी अभियान में सम्मिलित हुए? |

| | |
|---|---|
| | • निश्चित ही वे अपनी दुर्दशा के लिए अंग्रेजों को जिम्मेदार मानते थे और उनकी सत्ता को समाप्त करके पुनः परम्परागत व्यवस्था स्थापित करने की आकांक्षा रखते थे। इसके लिए उन्होंने अंत तक प्रयास भी किया।<br>• अतः ये सामन्तों द्वारा विद्रोह तो था मगर, सामन्ती हितों की रक्षा के साथ ही अंग्रेजी आधिपत्य को समाप्त करने के लिए विद्रोह था । |
| **सैनिक विद्रोह के रूप में** | • 1857 के विप्लव का सूत्रपात नसीराबाद में सैनिकों के असंतोष के फलस्वरूप हुआ था।<br>• तत्कालिक असंतोष का कारण चर्बी वाले कारतूस और आटे में हड्डियों का चूर्ण मिलाने के संदेह पर था । यह विद्रोह मुख्यतः सैनिकों द्वारा ही संचालित था।<br>• सैनिक छावनियों नसीराबाद, नीमच, देवली, ऐरनपुरा में सैनिकों ने अपने असंतोष का इजहार किया और विद्रोह कर दिया।<br>• ये सैनिक छावनियाँ नष्ट करने के बाद दिल्ली की ओर कूच कर गए। इसलिए इसे मात्र 'सैनिकों का विद्रोह' कहा जाता है।<br>• लेकिन 1857 के विप्लव को मात्र सैनिक विद्रोह नहीं माना जा सकता।<br>• क्योंकि यदि यह केवल सैनिक विद्रोह होता तो इसे जनता का समर्थन एवं सहयोग नहीं मिलता, जैसा कोटा, टोंक, बाँसवाड़ा व आउवा में मिला।<br>• जनता विद्रोही सैनिकों का स्वागत नहीं करती और न लोकगीतों के माध्यम से सैनिकों का शहीदों और वीरों की तरह उपाधी देकर सम्मानित किया जाता।<br>• सैनिक विद्रोह मात्र सैनिक कारणों से होता है जबकि यह सैनिक कारणों सहित जनता के असंतोष का भी परिणाम था । |
| **धार्मिक असंतोष के रूप में** | • 27 जुलाई, 1857 को डिजराइली ने हाउस ऑफ कॉमन्स में विद्रोह पर वक्तव्य देते हुए कहा कि ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा भारत की परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों के विरुद्ध अपनाई गई नीति के फलस्वरूप भारत में विद्रोह भड़क उठा था।<br>• सूअर एवं गाय की चर्बी वाले कारतूस एवं आटे में हड्डियों का चूर्ण स्पष्टतः धर्म से सम्बन्धित थे।<br>• कोटा में जयदयाल एवं मेहराब खान द्वारा जारी परिपत्र में अंग्रेजों द्वारा सैनिकों एवं जनता का धर्म भ्रष्ट करने की बात कही गई थी।<br>• ईसाई मिशनरी राजस्थान की गरीबी और अकाल का बेजा फायदा उठाकर यहाँ ईसाई धर्म का प्रचार कार्य कर रही थी। |

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात् हम इतना तो कह सकते हैं कि यह **न केवल सैनिक विद्रोह था, न सामन्तों का विद्रोह और न केवल धार्मिक असंतोष का परिणाम था । यद्यपि न्यूनाधिक रूप से ये सभी विद्रोह के कारण रहे हैं।** विद्रोह में सैनिकों, सामन्तों और जनता ने अपनी भागीदारी निभाई और इन सभी का **एक ही उद्देश्य था अंग्रेजी शासन की समाप्ति** । अतः उद्देश्य की समानता के आधार पर इसे एक **जन विप्लव या स्वातंत्र्य युद्ध कह** सकते हैं।

## क्रांति की असफलता के कारण

- राजा-महाराजाओं द्वारा अंग्रेजों का भरपूर सहयोग देना ।
  - बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह अंग्रेजों की सहायता के लिए अपनी सेना सहित राजस्थान के बाहर भी गये
  - पंजाब के हांसी, सिरसा, हिसार आदि स्थानों पर क्रांतिकारियों को परास्त किया।
  - करौली के महारावल मदनपाल ने कोटा शासक रामसिंह का क्रांतिकारियों से मुक्त करवाया।
- अलवर के महाराजा विनयसिंह ने आगरा के किले में घिरे अंग्रेज परिवारों की सहायता हेतु सेना भेजी।
- क्रांतिकारियों के पास धन तथा हथियारों की कमी।
- रणनीति तथा कुशल सेनानायकों का अभाव।
- क्रांति के सभी प्रमुख केन्द्रों पर क्रांति का एक समय पर प्रारंभ न होना।
- नसीराबाद के क्रांतिकारियों का अजमेर जाकर वहाँ के शस्त्रागार पर अधिकार करने के बजाय दिल्ली चले जाना ।
- सितम्बर, 1857 को मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को कैद कर अंग्रेजों ने लाल किले पर अधिकार कर लिया गया जिससे यह क्रांति नेतृत्वहीन हो गई।

## 1857 की क्रांति में राजस्थान

- राजस्थान की छः सैनिक छावनियों में से खेरवाड़ा तथा ब्यावर सैनिक छावनियों ने क्रांति में भाग नहीं लिया था।
- बीकानेर के अमरसिंह बांठिया - प्रथम राजस्थानी व्यक्ति जिन्हें फाँसी दी गई।
- राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का भामाशाह - दामोदर दास राठी ।
- वीरों का स्मारक स्तंभ - भचुन्डला (प्रतापगढ़)।
- अंग्रेजों ने निम्बाहेड़ा पर अधिकार कर निम्बाहेड़ा के मुख्य पटेल ताराचंद को तोप से उड़ा दिया था।
- रेबारी समुदाय के लोग मैकमेसन की कब्र पर पूजा अर्चना करते हैं।
- जयपुर के महाराजा रामसिंह द्वितीय द्वारा की गई सहायता से प्रसन्न होकर अंग्रेजों ने इन्हें स्थायी रूप से कोटपुतली का परगना प्रदान किया।

**मेवाड़ भील कोर**

- भारत में भीलों की प्रथम सेना बम्बई प्रान्त में स्थापित (1837) हुई जिसे 'खानदेश भील कॉर्पस' नाम से जाना जाता था।
- महाराणा सरदार सिंह के शासन काल (1838-1842) में अप्रैल, 1841 में गवर्नर जनरल अपनी सलाहकार परिषद की सलाह पर मेवाड़ भील कॉर्पस के गठन को स्वीकृति प्रदान कर दी.
- मेवाड़ भील कॉर्पस का मुख्यालय उदयपु राज्य में खैरवाड़ा रखा गया।
- मेवाड़ के भील क्षेत्रों खैरवाड़ा एवं कोटड़ा में दो छावनियाँ स्थापित की गई।

**शेखावाटी ब्रिगेड**

- (RAS PRE 2016) • शेखावाटी एवं तोरावाटी क्षेत्र में पनप रहे जनआंदोलनों व विद्रोहों को दबाने के लिए जयपुर रियासत के शेखावाटी में शांति एवं व्यवस्था बनाये रखने के नाम पर 1835 ई. में 'शेखावाटी ब्रिगेड' (मुख्यालय झुन्झुनूं) की स्थापना की गयी।
- जिसका नियंत्रण ब्रिटिश अधिकारियों के हाथों में था, किन्तु इसका खर्च जयपुर राज्य से वसूल किया जाने लगा।
- जोधपुर में भी शांति एवं व्यवस्था के नाम पर 'छाँग' तथा 'कोट किराना' परगनों के 21 गाँव ब्रिटिश सरकार ने अपने नियंत्रण में ले लिये।
- मेरवाड़ा में मेर व मीणों के उपद्रव को दबाने के लिए 'मेरवाड़ा बटालियन' कायम की गयी, जिसका सारा खर्च जोधपुर व उदयपुर राज्यों पर थोप दिया।
- 1835 ई. में 'जोधपुर लीजियन का गठन कर, उसका खर्च भी जोधपुर राज्य पर थोप दिया।
- 22 अक्टूम्बर 1870 ई. में भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल और वायसराय लार्ड मेयो ने अजमेर में एक सभी राजाओं और महाराजाओं को एक दरबार में आमंत्रित किया ।
- लेकिन इस दरबार में कोटा के महाराव को नही बुलाया गया था क्यों की 1857 के विद्रोह में उनकी भूमिका को संदिग्ध पाया गया।

## राजस्थान में विद्रोह का घटनाक्रम

| क्र.स. | विद्रोह का स्थान | विद्रोह की तारीख |
|---|---|---|
| 1. | नसीराबाद | 28 मई, 1857 |
| 2. | नीमच | 3 जून, 1857 |
| 3. | एरिनपुरा | 21 अगस्त 1857 |
| 4. | आउवा | अगस्त 1857 |
| 5. | देवली छावनी | जून 1857 |
| 6. | भरतपुर | 31 मई, 1857 |
| 7. | अलवर | 11 जुलाई, 1857 |
| 8. | धौलपुर | अक्टूबर 1857 |
| 9. | टोंक | जून 1857 |
| 10. | कोटा | 15 अक्टूबर, 1857 |
| 11. | अजमेर की केंद्रीय जेल | 9 अगस्त, 1857 |
| 12. | जोधपुर लीजियन | 8 सितम्बर, 1857 |

## विद्रोह के परिणाम

- विद्रोह के दौरान देशी शासकों ने अंग्रेजों की मदद की।
  - विद्रोह के दमन के बाद अंग्रेजों ने उन्हें उपाधियाँ और पुरस्कार दिए।
- सामंतवादियों द्वारा विद्रोह किया गया था इसलिए अंग्रेजों ने युद्ध के विघटन के बाद विभिन्न तरीकों से सामंती व्यवस्था की शक्ति को नष्ट करने का फैसला किया।
- विद्रोह काल में अंग्रेजों को अपनी सेना को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने में भारी असुविधा का सामना करना पड़ा।
  - इसलिए विघटन के बाद, 1865 ईस्वी में, जयपुर से अजमेर और नसीराबाद से चित्तौड़ के रास्ते नीमच के लिए दौसा की सड़क का निर्माण किया गया ।
- तख्तापलट के बाद राजस्थान के पारंपरिक सामाजिक ढाँचे में बदलाव आया।
  - विद्रोह के दमन के बाद आधुनिक शिक्षा का प्रसार हुआ।
  - सभी राज्यों में अंग्रेजी नियमों को लागू किया गया, जिससे ब्राह्मणों का महत्व कम हो गया।
  - जनता में एक नई चेतना और जागृति पैदा हुई।

### 1857 में राजपुताना में नियुक्त राजनीतिक एजेंट

| राजनीतिक एजेंट | स्थान |
|---|---|
| विलियम एडेन | जयपुर |
| मॉरिसन | भरतपुर |
| कप्तान शावर्स | उदयपुर |
| मेजर बर्टन | कोटा |
| जे.डी.हॉल | सिरोही |
| मैक मेसन | जोधपुर |

### प्रमुख सेना छावनी

| छावनी | स्थान |
|---|---|
| एरिनपुरा | पाली |
| ब्यावर | ब्यावर (राजस्थान) |
| खेरवाड़ा | उदयपुर |
| नसीराबाद | अजमेर |
| नीमच | वर्त्तमान मध्य प्रदेश में |
| देवली | टोंक |

### 1857 की क्रांति में राजपूताना शासक

| शासक | राज्य |
|---|---|
| सवाई रामसिंह द्वितीय | जयपुर |
| महाराजा विनयसिंह | अलवर |
| महाराजा जसवंतसिंह | भरतपुर |
| महाराजा मदनपाल | करौली |
| महाराव रामसिंह | बूँदी |
| महाराणा स्वरूपसिंह | उदयपुर |
| महाराव रामसिंह द्वितीय | कोटा |
| महाराजा सरदारसिंह | बीकानेर |
| नवाब वज़ीरदौला | टोंक |
| महारावल शिवसिंह | सिरोही |
| महारावल उदयसिंह | डूँगरपुर |
| महारावल रणजीतसिंह | जैसलमेर |
| राजराणा पृथ्वीसिंह | झालावाड़ |
| महाराजा भगवंतसिंह | धौलपुर |
| महारावल दलपतसिंह | प्रतापगढ़ |
| महारावल लक्ष्मणसिंह | बाँसवाड़ा |
| महाराजा तख्तसिंह | जोधपुर |

Chapter 2

# राजस्थान में जनजातीय आंदोलन

## जनजातीय आंन्दोलन

### राजस्थान में जनजागृति में आर्य समाज का योगदान

- राजस्थान में राजनीतिक चेतना जागृत करने एवं शिक्षा प्रसार में स्वामी दयानंद सरस्वती एवं आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया ।
- स्वामी दयानंद राजस्थान में सर्वप्रथम 1865 ई. में करौली के राजकीय अतिथि के रूप में आए। उन्होंने किशनगढ़, जयपुर, पुष्कर एवं अजमेर में अपने उद्बोधन दिए ।
- स्वामीजी का राजस्थान में दूसरी बार आगमन 1881 ई. में भरतपुर में हुआ।
- वहाँ से स्वामीजी जयपुर, अजमेर, ब्यावर, मसूदा एव बनेड़ा होते हुए चित्तौड पहुँचे, जहाँ कविराजा श्यामलदास' ने उनका स्वागत किया ।
- महाराणा सज्जनसिंह (1874-1884 ई.) के अनुरोध पर स्वामीजी उदयपुर पहुंचे, वहाँ महाराणा ने उनका आदर सत्कार किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने उदयपुर में आर्य समाज का प्रचार किया। उनके उपदेशों को सुनने के लिए मेवाड़ के अनेक सरदार नित्य उनकी सभा में जाया करते थे ।
- अगस्त, 1882 को स्वामी दयानन्द दुबारा उदयपुर पहुँचे। उदयपुर में स्वामीजी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय संस्करण की भूमिका लिखी ।
- उदयपुर में ही फरवरी, 1883 ई. में स्वामीजी के सानिध्य में परोपकारिणी सभा की स्थापना हुई ।
- कालान्तर में मेवाड में विष्णुलाल पंड्या ने आर्य समाज की स्थापना की ।
- 1883 ई. में ही स्वामीजी जोधपुर गए। जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह, सर प्रतापसिंह तथा रावराजा तेजसिंह पर स्वामीजी के उपदेशों का काफी प्रभाव पड़ा। अपने व्याख्यानों में स्वामीजी क्षत्रिय नरेशों के चरित्र संशोधन और गौरक्षा पर विशेष बल दिया करते थे ।
- जोधपुर में भरी सभा में स्वामीजी ने वेश्यागमन के दोष बतलाए और महाराजा जसवन्तसिंह की वेश्या 'नन्हीजान'" से प्यार करने के कारण उन्हें भी फटकार लगाई ।
- कहा जाता है कि वेश्या नन्हीजान ने ही स्वामी जी को विष दिलवा दिया, जिससे उनकी तबीयत बिगड़ गई। स्वामीजी को अजमेर ले जाया गया। काफी चिकित्सा के उपरान्त भी वह स्वस्थ नहीं हुए और अजमेर में ही 1883 ई. में इनका देहान्त हो गया ।
- दयानन्द सरस्वती ने स्वधर्म, स्वराज्य, स्वदेशी और स्वभाषा पर जोर दिया। उन्होंने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को उदयपुर में हिन्दी भाषा में लिखा।
- अजमेर में आर्य समाज की स्थापना की गई। स्वामी दयानंद सरस्वती एवं आर्य समाज ने राजस्थान में स्वतंत्र विचारों के लिए षष्टभूमि तैयार की ।
- आर्य समाज ने हिन्दी भाषा, वैदिक धर्म, स्वदेशी एवं स्वदेशाभिमान की भावना पैदा की। राजस्थान में राजनीतिक जागृति पैदा करने एवं शिक्षा प्रसार के लिए भी आर्य समाज ने सराहनीय कार्य किया ।
- आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी, अंग्रेजी भाषा के साथ ही वैदिक धर्म एवं संस्कृत की शिक्षा भी दी जाने लगी ।
- आर्य समाज ने सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। अजमेर में हरविलास शारदा व चांदकरण शारदा ने
- सामाजिक कुरीतियों के विरोध में आवाज उठायी ।
- आर्य समाज ने खादी प्रचार, हरिजन उद्धार, शिक्षा के प्रचार प्रसार को अपना मिशन बनाया ।
- भरतपुर में जनजागृति पैदा करने में लेटर आदित्येन्द्र व जुगल किशोर चतुर्वेदी आर्यसमाज के ही कार्यकर्ता थे ।

## जनजाति आन्दोलन के कारण

- वनों में जनजातियों के अधिकार समाप्त कर दिए गए
- इनके सामाजिक रीती-रिवाजों में हस्तक्षेप किया जाने लगा जैसे- 1853 ई. में मेवाड़ महाराणा स्वरूपसिंह ने ढाकन प्रथा पर रोक लगा दी थी
- जनजातीय नई प्रशासनिक व्यवस्था को समझ नही पाई तथा इसमें उनका शोषण होता रहा
- भू-राजस्व नगदी में किया जाता था अतः ये लोग साहूकारों के चुंगल में फस गए ।
- 1818 की संधियों के बाद नए प्रशासनिक परिवर्तनों ने कबीलों में आक्रोश पैदा किया ।
- जनजातियाँ अपनी आजीविका के लिए जंगलों पर निर्भर थीं और नए परिवर्तनों के तहत उनके वन अधिकार को गंभीर रूप से कम कर दिया गया था,
- उदाहरण, शहद और बांस तक उनकी आसान पहुंच को रोका गया था।
- अधिकांश जनजातियाँ झूम खेती का अभ्यास करती थीं और नई व्यवस्था के तहत इस प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया गया था ।
- जो जनजातियाँ बिना किसी बंधन के कई शताब्दियों तक स्वतंत्र रूप से रहीं, उन्हें अवैतनिक श्रम (बैठ-बेगार) करने के लिए मजबूर किया गया जो उनके लिए अस्वीकार्य था।
- कुछ जनजातियाँ रखवाली और बोएत जैसे कर वसूल करती थीं और बदले में गाँवों को सुरक्षा प्रदान करती थीं
- नई व्यवस्था के तहत इन सभी कर टेक्स को समाप्त कर दिया गया था।
- नई त्रुटिपूर्ण आबकारी नीतियों ने भीलों में आक्रोश पैदा किया क्योंकि इसने उन्हें शराब बनाने से प्रतिबंधित कर दिया था।

- सभी उत्पादन अधिकार पूरी तरह से राज्य के लिए आरक्षित थे।

**गोविंद गिरी**

- जन्म: डूंगरपुर के 'बांसिया गाँव में एक बंजारा परिवार में।
- भील जनजाति के महान समाज सुधारकों में से एक।
- कोटा-बूंदी के तपस्वियों के दशनामी संप्रदाय से थे और संत राजगिरी के शिष्य थे।
- दयानंद सरस्वती से प्रेरित थे
- भील जनजातियों के धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए भगत संप्रदाय की स्थापना की।
- भील जनजाति में शराब और अन्य पुरातन परंपराओं और प्रथाओं को छोड़ने के लिए कहकर कई सामाजिक सुधार किये।
- 1883 "सम्प-सभा" की स्थापना की।

## प्रमुख जन जातीय आंदोलन

## भील आन्दोलन या भगत आन्दोलन

- राजस्थान में जनजातियों के प्रभाव क्षेत्र दक्षिणी राजस्थान में आदिवासियों के सामाजिक सुधार के लिए सुरजी भगत ने आंदोलन प्रारम्भ किया जिसे भगत आंदोलन कहा जाता है ।
- भगत आंदोलन का **वास्तविक जनक गोविंद गिरी** था
- गोविंद गिरी दयानंद सरस्वती का आदिवासी शिष्य था
- भगत आंदोलन का नेतृत्व गोविंद गिरी ने किया था ।
- गोविंद गिरी का जन्म सन् **1858 में राजस्थान के डुंगरपुर जिले के बांसिया गांव में** एक बंजारे के घर में हुआ था।
- गोविंद गिरी ने दयानंद सरस्वती से आशीर्वाद लेकर दक्षिणी जनजातीय क्षेत्र में भगत आंदोलन को नई दिशा दी।
- भगत आंदोलन को नई दिशा देने के लिए गोविंद गिरी ने सन् 1883 में राजस्थान के सिरोही जिले में सम्प सभा की स्थापना की।

**सम्प सभा**

- गोविन्द गिरी ने भीलों को संगठित करने एवं उनमें **सामाजिक व राजनीतिक** स्थापना की।
- सम्प सभा का **प्रथम अधिवेशन 1903 में एवं दूसरा अधिवेशन 1913** में हुआ
- सम्प सभा के **मुख्य नियम** इस प्रकार थे

  **1.** शराब न पीना, **2.** चोरी और लूटमार न करना, **3**. डकैती नहीं करना, **4.** गाँव हवन करना **6.** पिछड़ी जातियों की आर्थिक स्थिति सुधारना, **7.** आपसी विवादों के व रोहिड़ा (सिरोही) में प्रारंभ किये।लतों में न जाना, **8.** बेगार नही करना और अन्याय का विरोध करना , **9.** स्वदेशी वस्त्रों का प्रयोग व

मानगढ़ हत्याकांड

- सम्प सभा के मानगढ़ (बाँसवाड़ा) वार्षिक अधिवेशन (17 नवम्बर, 1913 मार्गशीर्ष पूर्णिमा) में सेना द्वारा गोलियाँ चलाई।
- कर्नल शटन के आदेश पर मेजर हैमिल्टन मेजर एस. बेले और कैप्टन स्टॉकले की अगुवाई में मेवाड़ भील कोर व रजवाड़ों की अपनी सेना बड़ौदा से 104 वेलेजली राइफल्स और अहमदाबाद से सातवीं राइफल जाट रेजीमेंट ने संयुक्त रूप से वहाँ पहुँचकर अंधाधुंध गोलियाँ बरसाना शुरू कर दिया।
- यही नहीं, छावनी से आए सैनिकों ने सामने की पहाड़ी पर लगाई गई मशीनगनों से भी गोलियाँ चलाई, जिससे 1500 से भी अधिक भील मारे गये।
- मानगढ़ हत्याकांड 'राजस्थान में जलियांवाला बाग हत्याकांड' के नाम से जाना जाता है।

- गोविंद गिरी को सामाजिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व करने के कारण गुरू कहा जाने लगा था ।
- गुरू गोविंद गिरी ने भगत आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले में मानगढ़ पहाड़ी पर कार्यस्थल या कार्यक्षेत्र बनाया था ।
- 1911 ई. में गोविन्द गिरी द्वारा **'भगत पंथ '** की स्थापना की गई।
- भील बाहुल्य गाँवो में 'धुनियाँ' स्थापित की गई और उनकी सुरक्षा के लिए कोतवालों की नियुक्ति की गयी ।
- सम्प सभा का वार्षिक अधिवेशन **17 नवम्बर 1913 को बाँसवाड़ा जिले की मानगढ़** पहाड़ी पर आयोजित किया गया था ।
- गोविन्द गिरी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा 1920 ई. में रिहा कर दिया गया ।
- गुरू गोविंद गिरी ने अपना **अंतिम समय कम्बोई (गुजरात) में व्यतीत** किया था ।
- गुरू गोविंद गिरी का समाधि स्थल राजस्थान के बांसवाड़ा जिले की मानगढ़ पहाड़ी पर बना हुआ है।
- राजस्थान सरकार का पर्यटन विभाग गुरू गोविंद गिरी समाधि स्थल को मानगढ़ धाम नाम से पर्यटन के लिए विकसित कर रहा है।
- भगत आंदोलन का उद्देश्य भीलों को मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूक करना तथा भील समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना था ।
- गुरू गोविंद गिरी का गीत **"भूरटिया नी मानू रे नी मानू"** आज भी भील क्षेत्र में प्रचलित है ।

**आन्दोलन के बाद**

**मोतीलाल तेजावत**

- जन्म 1886 में उदयपुर राज्य के झाडोल ठिकाने के अन्तर्गत के कोल्यारी गाँव में हुआ।
- ये 'आदिवासियों के मसीहा' कहलाते हैं। आदिवासी इन्हें 'बावजी ' कहते थे ।
- भीलों में जागृति हेतु दो ऐतिहासिक आंदोलन उदयपुर के भोमट
- भील आंदोलन का दूसरा चरण मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में चले एकी आंदोलन (प्रारम्भ मातृकुण्डिया, चित्तौड़गढ़) के रूप में चला।
- इन्होंने 1920 में चितौड़गढ़ के मातृकुण्डिया ग्राम में सामंती जुल्मों के खिलाफ आंदोलन चलाया।
- भीलों की सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए इन्होंने वनवासी संघ की स्थापना की।

- यद्यपि गोविन्द गिरी के नेतृत्व में भील आन्दोलन को सफलता नहीं मिली और उसे हिंसात्मक रूप से दबा दिया गया
- लेकिन इसके महत्त्वपूर्ण दूरगामी परिणाम निकले।
- उसने भीलों में जो चेतना जाग्रत की, वह दमन के बावजूद समाप्त नहीं हुई ।

- राज्यों को अपने क्षेत्रों में भीलों की माँगें माननी पड़ी ।
- उनसे लिए जाने वाले लगान, लाग-बाग व बेगार में छूट दी गई ।
- पुलिस अधिकारियों व जागीरदारों को भीलों के साथ अच्छा व्यवहार करने के निर्देश दिए गए ।
- भीलों ने सामाजिक कुरीतियों को काफी सीमा तक दूर करके नए जीवन की शुरुआत की ।

## एकी आन्दोलन (1921-22)

- ये भोमट क्षेत्र के भील तथा गरासिया जनजाति लोगों द्वारा किया गया था, इसलिए **भोमठ भील आंदोलन** भी कहते हैं ।
- **चित्तौडगढ़ के मातृकुण्डिया नामक स्थान से** वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को यह आंदोलन शुरू हुआ था ।
- मातृकुण्डिया को '**राजस्थान का हरिद्वार**' कहते हैं ।
- इस आंदोलन के मुख्य नेता **मोतीलाल तेजावत** थे ।
- मोती लाल तेजावत मेवाड़ रियासत के '**झाड़ोल ठिकाणे**' के कामदार थे ।
- प्रारम्भ में यह आंदोलन झाडोल, कोटडा व गोगुन्दा तहसीलों में शुरू हुआ था। जो बाद में डुँगरपुर, बाँसवाड़ा, इंदोर, विजयनगर (गुजरात कि एक रियासत) आदि रियासतों में फैल गया ।

**उद्देश्य**
- अत्यधिक लगन को कम करना
- अन्यायपूर्ण लागतों को कम करना
- बेगार से किसानों को मुक्ति दिलाना आवश्यकतानुसार वन संपदा का प्रयोग निःशुल्ककरने का अधिकार प्राप्त करना
- जंगली सुअरों से फसलों की सुरक्षा करनाराज्य कर्मचारियों एंव जागीरदारों के अत्याचारों पर रोक लगाना
- आदिवासियों में व्याप्त बुराइयों और कुरीतियों को दूर करना

- मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ महाराणा के समक्ष **21 सूत्री मांग-पत्र** प्रस्तुत किया था, जिसे **मेवाड़ की पुकार**' कहते हैं । **(RAS MAINS 2016)**
- **7 मार्च 1922 ई. में नीमड़ा** (विजयनगर) गाँव में हो रहीं एक सभा पर पुलिस फायरिंग कर दी गयी थी ।
- मोती लाल तेजावत इस आंदोलन के बाद भूमिगत हो गए, पर **1929 में गांधीजी के कहने पर ईडर** पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया ।
- ईडर रियासत ने उन्हें मेवाड़ को सौंप दिया, मेवाड़ की सर्वोच्य न्यायिक संस्था '**महाइन्द्राज सभा**' ने मोतीलाल तेजावत से रियासत के विरूद्ध कोई गतिविधि नहीं करने का लिखित आश्वासन मांगा ।
- गाँधीजी के सहायक मणिलाल कोठारी के हस्तक्षेप से समझौता हुआ ।
- 1936 ई. में मोतीलाल तेजावत को रिहा कर दिया गया ।

**महाइन्द्राज सभा**
- मेवाड़ का सर्वोच्च न्यायालय जिसकी स्थापना 1880 ई. में महाराणा सज्जनसिंह द्वारा की गई ।
- मेवाड़ भील कोर इसकी स्थापना 1841 में की गई ,इसका मुख्य केन्द्र खेरवाड़ा (उदयपुर) था ।

## मेर आन्दोलन ( 1818 – 1821 )

- मेर जाति के लोगों द्वारा आबाद क्षेत्र मेरवाड़ा अंग्रेजों के आगमन से पूर्व किसी एक रियासत के अधीन न होकर मेवाड़, मारवाड़ तथा अजमेर के अधीन आता था ।
- मेर लूटपाट कर अपना जीवन व्यतीत करते थे ।
- सन् 1818 में अंग्रेज सुपरिन्टेन्डेट एफ. वेल्डर मेर जाति के लोगो से समझौते करके कर लगा देता है ।
- सन् 1819 में वेल्डर समझौते तोड़ देता है ।
- **सन् 1821 में मेर झाक नामक चौकी में आग** लगा देते है।
- मेर जाति के लोगो को नियंत्रित करने के लिए **सन् 1822 में मेरवाड़ा बटालियन की स्थापना** होती है ,जिसका **मुख्यालय ब्यावर (अजमेर)** को बनाया जाता है ।

## मीणा आन्दोलन

- मीणाओं की लूटमार एवं उपद्रवों से परेशान होकर भारत सरकार ने **1924 ई. में 'क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट'** पारित किया ।
- जयपुर राज्य ने भी1930 ई. में एक **'जरायमपेशा कानून'** बनाकर मीणाओं को अपराधी जाति घोषित कर दिया ।
- इस कानून के अनुसार **25 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक स्त्री-पुरुष को प्रतिदिन पुलिस थानों में** उपस्थिति देनी पड़ती थी ।
- 1924 ई. के **अपराधी जाति अधिनियम का मीणा समाज के प्रबुद्ध लोगों ने विरोध** किया ।
- छोटूराम झरवाल, महादेवराम पवड़ी एवं जवाहरराम मीणा ने '**मीणा जाति सुधार समिति**' की स्थापना की।
- इस समिति का **उद्देश्य** मीणाओं में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करके उनमें शिक्षा का प्रसार करना था। उसके लिए इन लोगों ने गाँव - गाँव भ्रमण कर मीणाओं में जागृति पैदा की तथा पाठशालाएँ खोलने पर बल दिया।
- **1933 ई. में 'मीणा क्षेत्रीय महासभा'** की स्थापना हुई, जिसने जयपुर राज्य में '**जरायमपेशा कानून' समाप्त करने की माँग** की ।
- **1942** ई. में **दिल्ली** में **'अखिल भारतीय मीणा क्षेत्रीय महासभा'** का अधिवेशन हुआ, जिसमें जयपुर से भँव**र**लाल, **बिरधीचन्द** तथा **सूथालाल मीणा** ने भाग लिया ।
- इस सम्मेलन में **'अपराधी जाति अधिनियम'** का विरोध किया गया तथा मीणा समाज में प्रचलित कुरीतियों को दूर करने का आह्वान किया गया ।
- **जैन मुनि मगन सागर** ने **'मीनपुराण'** लिखकर मीणा जाति को उसके प्राचीन गौरव का भान करवाया ।
- **अप्रैल**, **1944** में **मुनि मगन सागर** की अध्यक्षता में नीम का थाना में मीणों का एक बड़ा सम्मेलन हुआ जिसमें '**मीणा सुधार समिति**' की स्थापना की गई। इस समिति में अ**ध्यक्ष श्री बंशीधर शर्मा** मंत्री श्री राजेन्द्रकुमार एवं संयुक्त मंत्री **लक्ष्मीनारायण** झरवाल बनाए गए ।
- समिति ने **तीन सूत्री कार्यक्रम** रखा। यह कार्यक्रम था—
  1. मीणा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करना,

2. **जरायमपेशा** और **दादरसी** जैसे कानूनों के रद्द करवाने के लिए आन्दोलन
3. चौकीदारी प्रथा को समाप्त करना ।

- 1945 ई. में 'मीणा सुधार समिति' का श्रीमाधोपुर में सम्मेलन हुआ । इस सम्मेलन में '**जरायमपेशा कानून**' के विरोध में राज्यव्यापी आन्दोलन शुरू करने का निर्णय लिए **गया ।**
- **ठक्कर बाप्पा** ने मीणाओं की स्थिति में सुधार के लिए जयपुर राज्य के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल को पत्र लिखा ।
- **अतः 3 जुलाई**, **1946** को जयपुर राज्य में जरायमपेशा कानून समाप्त कर दिया गया ।
- 28 अक्टूबर, 1946 को बागावास में मीणाओं का विशाल सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में मीणाओं ने चौकीदारी से त्यागपत्र दे दिया ।
- जयपुर राज्य ने चौकीदारी कार्य के लिए जो जमीन दी थी, वो वापस ले ली। मीणाओं ने जमीन वापस लेने के विरोध में 6 जून, 1947 को जयपुर में प्रदर्शन किया ।
- **उन्होंने** पुलिस थानों में उपस्थिति देना बन्द कर दिया। फलस्वरूप हजारों मीणों को जेल में डाल दिया गया ।
- **अंत** में 1952 ई. में **हीरालाल शास्त्री** एवं **टीकाराम पालीवाल** के प्रयासों से मीणों पर लगाए गए सभी प्रतिबंध समाप्त कर दिए गए तथा मीणा जाति स्वतंत्र नागरिकों की हैसियत से राष्ट्र की मुख्यधारा में सम्मिलित हो गई ।

# 3 Chapter राजस्थान में किसान आंदोलन

## किसान आंदोलनों के कारण

- 19वीं सदी की शुरुआत में राजस्थान की रियासतों ने अंग्रेजों के साथ संधियों पर हस्ताक्षर करना शुरू किया (1818 ई. में)।
  - इन संधियों ने रियासतों को मराठों, पिंडारियों के साथ-साथ अन्य रियासतों के बाहरी हमलों से मुक्त किया।
  - अतिरिक्त कर लगाये गए, जिसका बोझ शासकों ने किसान वर्गों पर डाल दिया ताकि वे विलासिता और आराम का जीवन जीते रहे।
- इसलिए, राजस्थान की रियासतों में किसान ब्रिटिश साम्राज्यवाद और देशी सामंतवाद के दोहरे शोषण के बोझ तले दबने लगे।
  - जनता में महत्वपूर्ण असंतोष हुआ जिसके परिणामस्वरूप पूरे राजस्थान में कई किसान आंदोलन हुए।

**अन्य कारण (RAS MAINS 2018)**

- किसानों द्वारा भारी भूमि राजस्व का भुगतान
- बड़ी संख्या में लाग बाग़ (उपकर)
- सीमा शुल्क का भुगतान
- बेगार (जबरन श्रम)
- 1878 के बाद राज्यों द्वारा लूट को संस्थागत बनाने के लिए ब्रिटिश तर्ज पर नए भू-राजस्व बंदोबस्त किए गए।
  - उद्देश्य अधिक धन एकत्र करना
  - परिणामस्वरूप एक ओर कृषि का ह्रास हुआ और दूसरी ओर किसानों की गरीबी और ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई।

## राजस्थान में किसान आंदोलनों की सामान्य विशेषताएँ

- प्रारंभिक अवस्था - अधिकांश किसान आंदोलन स्वत स्फूर्त थे और सामाजिक सुधार आंदोलनों के परिणाम थे।
- राजस्थान में किसान आंदोलन शुरू में सामाजिक सुधारों के तले उठे और एक आर्थिक संघर्ष में परिणत हुए।
  - इनके प्रारंभिक चरण में जाति पंचायतों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- किसान संघर्षों के दौरान जाति संगठन, वर्ग संगठनों के रूप में विकसित हुए।
- 1938-1949 ई ,के बीच जिम्मेदार सरकारों के लिए किसान आंदोलन और प्रजामंडल आंदोलन एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ सहयोग में रहे।

## राजस्थान के विभिन्न किसान आंदोलन

### मेव किसान आंदोलन (1930-34)

- क्षेत्र: अलवर व भरतपुर, डीग, खेरतल, तिजारा, मेवात।
- मेव जाति का आंदोलन 1931 ई. में ही शुरू हुआ था ।
- कारण:-
  - महाराजा जयसिंह द्वारा लगान बढाना ।
  - सूअरों या रोंधो की समस्या ।
  - मेव मुसलमानों की साम्प्रदायिक मांगे ।
  - यह लगान विरोधी आंदोलन था ।
- नेता- मोहम्मद अली एवं यासीन खान
- अलवर, भरतपुर क्षेत्र में **मोहम्मद हादी ने 1932 ई. में 'अंजुमन खादिम उल इस्लाम'** नामक संस्था स्थापित कर मेव किसान आंदोलन को एक संगठित रूप दिया।
- अलवर के मेव किसान आंदोलन का नेतृत्व **गुडगाँव के चौधरी यासीन खान** द्वारा किया गया।
- इसके नेतृत्व में किसानों ने **खरीफ फसल का लगान देना बंद** कर दिया।
- राज्य सरकार ने मेवों को संतुष्ट करने के लिए राज्य कॉन्सिल में एक मुस्लिम सदस्य **खान बहादुर काजी अजीजुद्दीन बिलग्रामी** को सम्मिलित कर लिया।
- इसके बावजूद भी आंदोलन न केवल तेज हुआ, बल्कि उग्र भी हो गया।
- **1937** ई. में मि. **बिलग्रामी के मातहत मेव संकट की जाँच हेतु** एक विशेष समिति का गठन किया गया।
- इस समिति की रिपोर्ट के आधार पर मेवों को भू-राजस्व तथा अन्य करों में छूट के साथ-साथ सामाजिक व धार्मिक समस्याओं का समाधान भी किया गया।
- यह राजस्थान का एकमात्र किसान आन्दोलन था जिसमे सांप्रदायिक हिंसा हुई ।

### अलवर में किसान आंदोलन

### सूअरपालन विरोधी आंदोलन (1921):

- अलवर में बाड़ों में सूअर पालन किया जाता था, जब कभी इन सुअर को खुला छोड़ा जाता था, तब ये फसल नष्ट कर देते थे।
  - किसानों ने विरोध किया, क्योंकि सरकार ने सुअरों को मारने पर पाबंदी लगा रखी थी।
- लेकिन अंत में 1921 में सरकार के द्वारा सुअरों को मारने की अनुमति दे दी एवं आंदोलन शांत हो गया।

### नीमूचणा किसान आंदोलन ( 1923-24 ई.)

- 1876 ई. में ब्रिटिश पद्धति पर **अलवर में पहला भूमि बंदोबस्त** किया गया ।
- नीमूचणा किसान आंदोलन अलवर में हुआ । वर्तमान में अलवर जिले की बानसूर तहसील में है ।
- 1923 ई. में अलवर के शासक जयसिंह के द्वारा किसानों पर लाग/कर लगाए जाने के कारण इस आंदोलन की शुरूआत हुई।

- नीमूचणा गाँव के किसान रघुनाथ की पुत्री सीतादेवी 14 मई, 1925 ई. को नीमूचणा गाँव में महिलाओं का नेतृत्व करते हुए किसानों को ललकार रही थी कि हम किसी भी हालत में ठिकाने को अधिक लगान नहीं देंगे ।

**इजारा पद्धति**
- ऊंची बोली बोलने वाले को निश्चित भूमि निश्चित अवधि के लिए दिया जाना इजारा पद्धति कहलाती है।

- 1924 ई .में नीमूचणा आंदोलन की समस्या को **माधवसिंह व गोविंदसिंह ने पुकार नामक पुस्तक के** माध्यम से उठाया ।
- 14 मई , 1925 ई .को लगभग 800 किसान नीमूचणा में इक्कठे हुए जिन पर अंग्रेज **कमाण्डर छज्जूसिंह** ने गोलियाँ चला दी, जिसमें लगभग 100 लोग शहीद हुए तथा संपूर्ण गाँव राख हो गया ।
- छज्जूसिंह को राजस्थान का 'जनरल डायर' कहा जाता है । महात्मा गाँधी ने पत्रिका '**यंग इंडिया**' में नीमूचणा काण्ड को जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से भी वीभत्स कहते हुए दोहरे हत्याकाण्ड ( दोहरी डायरशाही ) की संज्ञा दी ।
- तरूण/नवीन राजस्थान ( विजयसिंह पथिक ) व प्रताप ( गणेश शंकर विद्यार्थी ) ने नीमूचणा घटना को प्रकाशित किया

## बूँदी किसान आंदोलन / बरड़ किसान आंदोलन (1926)

- नेता: पंडित **नयनूराम शर्मा**
- किसानों ने लगान ,लाग बाग की ऊँची दरों के विरुद्ध आंदोलन छेड़ा।
- **डाबी हत्याकांड:(2 अप्रैल, 1923 )**
  - नयनूराम शर्मा के नेतृत्व में डाबी नामक स्थान पर किसानों का एक सम्मेलन बुलाया ।
    - इकराम हुसैन नामक पुलिस अफसर ने किसानों पर गोलियाँ चलाई, जिसमें झण्डा गीत गाते हुए **नानकजी भील और देवी लाल गुर्जर** शहीद हो गए।
- इस आंदोलन में महिलाओं का नेतृत्व **अंजना चौधरी** ने किया ।
- बाद में माणिक्यलाल वर्मा ने इसका नेतृत्व किया।
- यह 17 वर्षो तक चला एवं 1943 ई .में समाप्त हो गया ।-
- **तरूण राजस्थान, नवीन राजस्थान** ( अजमेर ) , **राजस्थान केसरी** ( वर्धा ), **प्रताप** ( कानपुर ) आदि समाचार-पत्रों में आंदोलनकारियों पर किये जा रहे जुल्मों का व्यापक रुप से प्रचार हुआ ।
- माणिक्यलाल वर्मा ने बिजौलिया किसान आंदोलन के दौरान **पंछीड़ा गीत** एवं **नानक जी भील** की स्मृति में **अर्जी** नामक गीत की रचना की थी ।

## बिजौलिया किसान आंदोलन/ धाकड़ जाट किसान आंदोलन (1897-1941)

- बिजोलिया ठिकाने (मूल नाम - विजयावल्ली ) के प्रवर्तक अशोक परमार थे।
- अशोक परमार अपने मूल स्थान जगमेर (भरतपुर) से राणा सांगा की सेवा में चित्तौड़ आए। वे राणा सांगा की ओर से 1527 ई. में खानवा के युद्ध में भी लड़े थे।
- इस युद्ध में अशोक परमार की वीरता को देखते हुए **सांगा ने इन्हें** '**ऊपरमाल**' की जागीर प्रदान की।
- किसानों की उग्रता को देखते हुए भारत सरकार के आदेश पर राजपूताने के ए. जी. जी. रॉबर्ट हॉलैण्ड स्वयं 4 फरवरी, 1922 को बिजौलिया गये ।

  **कारण:-**
  - **84** प्रकार की लाग-बाग कर
  - अधिक भू-राजस्व का लेना
  - लाटा-कुंता प्रथा
  - चंवरी कर (लड़कियों की शादी पर 5 रूपए का कर )
  - तलवार बंधाई कर (उत्तराधिकारी कर )

## मेवाड़ रियासत में यह आन्दोलन तीन चरणों में संपन्न हुआ ।

### प्रथम चरण (स्वस्फूर्त किसान आन्दोलन) 1897 से 1915 तक

- नेता -साधु सीताराम दास
- उस समय बिजौलिया के **ठिकानेदार राव कृष्णसिंह थे और महाराणा फतेह सिंह** थे ।
- किसानों से भू राजस्व निर्धारण और संग्रहण के लिए **लाटा कुंता पद्धति** प्रचलित थी ।
  - इसके अंतर्गत किसान अपनी मेहनत की कमाई से भी वंचित रह जाता था ।
- प्रथम प्रयास के लिए 1897 ई .में उपरमाल के किसानों ने **गिरधारीपुरा नामक ग्राम** में सामूहिक रूप से किसानों की ओर से **नानजी और ठाकरी पटेल** को उदयपुर भेजकर ठिकाने के जुल्मों के विरुद्ध महाराणा से शिकायत करने का निर्णय किया ।
  - कोई कार्यवाही नहीं होने पर ठिकानेदार राव कृष्ण सिंह द्वारा नानजी और ठाकरी पटेल को ऊपरमाल से निर्वासित कर दिया गया ।
- **1903 - कृष्ण सिंह** ने **चंवरी कर** लगा दिया।
  - 5 रू. का यह कर किसानों की **कन्याओं के विवाह से संबंधित** था ।
- **1906** - कृष्ण सिंह के निधन के पश्चात पृथ्वी सिंह ने किसानों पर **तलवार बंधाई कर** लगा दिया।
  - **यह राज्याभिषेक संबंधी** कर था। **RAS PRE 2007**
  - किसानों ने साधु सीताराम दास, फतेह करण चारण एवं ब्रह्मदेव के नेतृत्व में विद्रोह किया ।
- किसानों ने अपनी कन्याओं के विवाह स्थगित कर आन्दोलन तेज कर दिया।

**महत्वपूर्ण नेता**
- साधु सीताराम दास
- फतेहकरण
- ब्रह्मदेव दाधीच
- नाथूलाल कामदार
- नानजी पटेल व ठाकरी पटेल
- प्रेमचंद भील व रामजीलाल सुनार

## द्वितीय चरण (किसानों की नयी चेतना का काल) 1916 से 1922 तक-

- जनवरी 1915 में विजयसिंह पथिक ,रासबिहारी बोस के कहने पर राजस्थान में आये ।
- राजस्थान में भटकने के बाद पथिक चित्तौड के समीप ओछड़ी के **ठाकुर गोपाल सिंह के पास आये** जहाँ पथिक का बिजौलिया के किसान नेताओं से संपर्क हुआ ।
- 1916 ई. - विजयसिंह पथिक इस आंदोलन से जुड़े (वास्तविक नाम भूपसिंह गुर्जर)।
    - साधु **सीताराम दास व रामनारायण चौधरी के आग्रह पर** बिजौलिया के किसानों ने उनका नेतृत्व स्वीकार कर लिया।
    - इन्होने **कानपुर से प्रकाशित प्रताप नामक समाचार पत्र (गणेश शंकर विद्यार्थी)** के माध्यम से बिजौलिया के किसानों की दुर्दशा को उजागर किया।

**महत्वपूर्ण नेता**
- नारायण पटेल
- विजय सिंह पथिक

## बिजौलिया किसान का प्रसार करने वाले समाचार पत्र

- **कानपुर - प्रताप (गणेश शंकर विद्यार्थी**)
- प्रयाग - अभ्युदय:
- कोलकात्ता - भारत-मित्र
- पूना - मराठा ( बाल गंगाधर तिलक)
- प्रेमचंद का रंगभूमि उपन्यास
- **माणिक्य लाल वर्मा द्वारा "पंछीडा"** गीत से किसानो को उत्साहित करते थे ।
- भवंर लाल जी अपने गीतों के माध्यम से
- 1917 - **ऊपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना**
    - सरपंच - श्री मन्ना पटेल
- 1919 - किसानों की माँगों के औचित्य की जांच करने के लिए **न्यायमूर्ति बिंदु लाल भट्टाचार्य जाँच आयोग** गठित हुआ (सदस्य -**दीवान अफजल अली और अमरसिंह राणावत**)।
    - अतः गाँधी जी जैसे बड़े नेता भी इस आन्दोलन से जुडे ।
- राजपूताने के एजीजी रॉबर्ट होलैंड स्वयं 4 फरवरी 1922 को बिजौलिया गए ।
    - उनके प्रयासों से **11 जून ,1922 को समझौता** हुआ ।
    - किसानों के 84 में से 35 करो को समाप्त करने का आश्वासन दिया किन्तु 1922 ई. तक उन्हे क्रियान्वित नहीं किया गया।
        - अतः किसानों ने आन्दोलन पुनः आरम्भ किया।
- आंदोलन के दौरान विजयसिंह पथिक पर सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया

## तृतीय चरण 1923 से 1941 तक

- 1927 ई .को पथिक जी इस आंदोलन से अलग हो गए ।
- नए नेता- **सेठ जमनालाल जी एवं हरिभाऊ जी उपाध्याय थे** ।
- अन्त में **माणिक्यलाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय तथा जमनालाल बजाज** ने बिजौलिया किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया।
- 1941 - मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी ,विजय राघवाचार्य ने राजस्व विभाग के मंत्री **डॉक्टर मोहन सिंह मेहता** को बिजौलिया भेजा ।
- उन्होंने माणिक्य लाल वर्मा के नेतृत्व में किसानों की सभी माँगे मान मान कर उनकी जमीने वापस दिलवा **दी**।

**महत्वपूर्ण नेता**
- माणिक्यलाल वर्मा
- रामनारायण चौधरी
- जमनालाल बजाज

## बिजौलिया किसान आन्दोलन में महिलाएँ

- बिजोलिया किसान आंदोलन के तृतीय चरण में महिला उम्मीदवारों में **अंजना देवी चौधरी, नारायणी देवी वर्मा व रमा देवी प्रमुख थी।**
  **(RAS PRE 2021)**
- **रमा देवी** ने बिजौलिया किसान आन्दोलन में भाग लिया और उन्हें गिरफ्तार किया गया ।
- इसने1930 ई. के सत्याग्रह और 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोंलन में भाग लिया और जेल गई ।

## आन्दोलन का स्वरूप

- बिजौलिया किसान आन्दोलन का प्रारम्भ उत्साहपूर्वक हुआ, मगर उसका अंत नैराश्यपूर्ण था।
- लगभग 44 वर्षो तक चला किसान आन्दोलन अन्त में सफल हुआ।
- भारत वर्ष का प्रथम अहिंसात्मक, असहयोगात्मक, व्यापक और शक्तिशाली किसान आंदोलन था
- किसानों ने असहयोगात्मक एवं अहिंसात्मक तरीके से आन्दोलन चलाया।
- दमन के बावजूद किसानों के साहस एवं उत्साह में कमी नहीं आई।
- पथिक ने इस आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान दिया। फलतः कांग्रेस अधिवेशनों में भी यह चर्चा का विषय बना।
- गाँधीजी ने भी इस आन्दोलन में रुचि ली, मगर आन्दोलन की अंतिम बेला पर यह नेतृत्वविहीन हो गया ।

## आन्दोलन के प्रभाव

- आन्दोलन की जीवता के दौरान इसे विजयसिंह पथिक, साधु सीतारामदास, माणिक्यलाल वर्मा, रामनारायण चौधरी और हरिभाऊ उपाध्याय जैसे कर्मठ नेतृत्वकर्ता मिले।
- यद्यपि यह आन्दोलन पूर्णरूपेण सफल नहीं रहा, फिर भी इसने राजस्थान के किसानों में सामन्तवाद एवं उपनिवेशवाद के विरुद्ध चेतना जागृत की।
- किसानों में राजनैतिक चेतना का विकास हुआ ।
- यह आन्दोलन राजस्थान के अन्य भागों के किसान आन्दोलनों की प्रेरणा एवं उत्साह का स्रोत रहा।
- हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जुडाव स्थापित हुआ ।

## बेंगू किसान आंदोलन, चित्तौड़गढ़ (1921-23 )

(RAS MAINS 2021)

- चित्तौड़गढ़ रियासत में बेंगू किसान आंदोलन 1921 ई .में **मेनाल में भैरुकुंड नामक स्थान** पर शुरू हुआ
- **कारण**-
  - किसानों से लाग - बाग ,उनकी लगान के कारण
  - बेगार प्रथा के कारण
  - भूमि का सही बन्दोबस्त नहीं होना
    - **नेता**- रामनारायण चौधरी
  - बेंगू में किसान सभा आयोजित की।
  - उन्होंने फैसला किया कि ना तो फसल का कुंता कराया जायेगा और ना ही लगाने दी जाएगी
  - बेंगू के जागीरदार **ठाकुर अनूपसिंह ने सभा पर फायरिंग** करवा दी ।
    - **रूपाजी धाकड़ व कृपा जी धाकड़** दो किसान मारे गए ।
  - अतः आन्दोलन और तेज हुआ।
- ठाकुर अनूपसिंह को किसानों के आगे झुकना पड़ा।
- अनूप सिंह ने किसानों की माँगे मान ली।
- अंग्रेजों ने अनूपसिंह को नजरबंद कर दिया ।
  - अनूपसिंह व किसानों के मध्य समझौते को **बोल्शेविक समझौते** का नाम दिया।
- आन्दोलन की जाँच के लिए **ट्रेंच आयोग का गठन** किया ।
  - किसानों ने उसका बहिष्कार किया ।
  - **13 जुलाई ,1923 को गोविंदपुर में किसानों की अहिंसक सभा पर ट्रेंच द्वारा लाठीचार्ज एवं गोलियाँ चलायी**
  - रूपा जी, कृपा जी नामक दो किसान शहीद हुए ।
- बाद में आन्दोलन की बागड़ोर **विजयसिंह पथिक ने सम्भाली** थी।
- बेंगू किसान आंदोलन में **तरुण राजस्थान** नामक समाचार पत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा था ।
- अंततः आंदोलन के कारण बने दबाव से बेंगू ठिकाने में व्याप्त मनमानी के राजगढ़ ठाकुर शाही के स्थान पर बंदोबस्त व्यवस्था लागू की गई ।

## आन्दोलन के बाद

- ठिकाने की दमनात्मक कार्यवाही से किसानों का मनोबल कमजोर हो गया था।
- बाद में **विजयसिंह पथिक ने बेंगू पहुँचकर आन्दोलन का नेतृत्व** सँभाला।
- पथिक के नेतृत्व में **किसानों ने असहयोग आन्दोलन शुरू** कर दिया।
- फलत: 10 सितम्बर, 1923 को **पथिक को गिरफ्तार करके पाँच वर्ष के कारावास** की सजा दी गई।
  लेकिन, आन्दोलन के दबाव से **दिसम्बर, 1923 में बेंगू में बन्दोबस्त** किया गया।
- 1925 ई. में **लगान दरें निर्धारित की गई**; **34 लागतें समाप्त कर** दी गई ।
- **बेगार पर भी रोक लगा** दी गई, जिससे किसानों की स्थिति में सुधार आया ।

## शेखावटी किसान आंदोलन (1925)

- शेखावाटी किसान आंदोलन के दौरान **राम नारायण चौधरी ने डेली हेराल्ड (**लंदन) का प्रमुखता से प्रयोग आंदोलन को प्रभावी मुद्दा बनाने में किया था ।
- नेता - **सरदार हरलाल सिंह**
- 1921 - शेखावाटी क्षेत्र में ' **चिडावा सेवा समिति '** के गठन के पश्चात् आंदोलन की शुरूआत हुई ।
- रामनारायण चौधरी ने किसानों में जागृति पैदा की थी ।
  - शुरुआत सीकर ठिकाने से हुई।
  - वहीं पर इस आंदोलन का **नेतृत्व करने वाले प्रमुख किसान नेता** थे-
    - सरदार हरलाल सिंह, नेतराम सिंह, पृथ्वीसिंह गोठड़ा, पन्ने सिंह बाटड़ानाउ, हरूसिंह पलसाना, गौरूसिंह कटराथल, ईश्वरसिंह भैरूपुरा, लेखराम कसवाली आदि।
- निर्णायक दौर - 1931 -32 ई.
- **1934-35 ई. में सभी ठिकानों पर गतिशील** हो गया ।
- **हाऊस ऑफ कॉमन ( इंग्लैंड ) मे भारी बहस** का मुद्दा बना ।
  - इसे उठाने वाले **लॉरेन्स** थे ।
- इस किसान आंदोलन के तहत मंडावा ठिकाना में देवीबख्श ने नागरिक अधिकारों की घोषणा की ।
  - शेखावाटी जकात आन्दोलन का नेतृत्व **पं. नरोत्तम लाल जोशी** ने किया ।
- शेखावाटी में पाँच प्रमुख ठिकाने **बिसाऊ, डूंडलोद, मण्डावा, मलसीसर व नवलगढ** थे ।
  - पाँच ठिकानों को **पंच पाणे** कहा जाता था ।

**पंचपाण**

- जयपुर राज्य के शेखावाटी क्षेत्र में छोटे-बड़े 421 जागीरदार थे।
- इस क्षेत्र में पाँच बड़ी जागीरे नवलगढ़, मंडावा, डूंडलोद, बिसाऊ और मालासर थी, जिन्हें 'पञ्च पाणे' कहा जाता था।
- 'पंचपाण' सम्पूर्ण शेखावार्टी क्षेत्र का 75% भाग थी।

## आन्दोलन की प्रमुख घटनाएँ

| | |
|---|---|
| **कटराथल कांफ्रेंस 25 अप्रैल, 1934** | • 10000 से ज्यादा औरतों ने इसमें भाग लिया ।<br>• कारण- सिहोट के सामंत ने औरतों से दुर्व्यवहार किया ।<br>• **सरदार हरलाल की पत्नी किशोरी देवी जाट** ने 10 ,000 महिलाओं के नेतृत्व में विशाल महिला सम्मेलन आयोजित किया ।<br>• इस सम्मेलन में **उत्तमा देवी** के द्वारा भाषण दिया गया । |
| **कुंदन हत्याकांड 25 अप्रैल, 1935** | • **धापी देवी की सलाह पर**, किसानो ने भूराजस्व देने से मना कर दिया । |

| | |
|---|---|
| | • कैप्टन वेब में किसानो पर गोली चला दी ।<br>• कुंदन गाँव का हत्याकाण्ड इतना बीभत्स था कि ब्रिटेन की संसद के महत्वपूर्ण सदन **हाउस ऑफ कॉमन्स** में भी इस पर चर्चा हुई<br>• शहीद होने वाले किसान थे - चेतराम, टीकूराम तथा लगभग 175 जाट किसान गिरफ्तार कर लिए गए। |
| **जयसिंहपुरा हत्याकांड 21 जून ,1935** | • ठाकुर ईश्वरी सिंह ने जयपुर के जयसिंहपुरा गाँव में किसानों पर गोलियाँ चलाई ।<br>• इस काण्ड को जयसिंहपुरा किसान हत्याकाण्ड के नाम से जाना जाता है।<br>• इस हत्याकाण्ड के पश्चात ईश्वरीसिंह व उसके साथियों पर मुकदमा चलाया गया व उन्हें सजा हुई ।<br>• जयपुर राज्य में यह प्रथम मुकदमा था, जिसमें जाट किसानों के हत्यारों को सजा दिलाना संभव हो सका । |
| **जाट प्रजापति महायज्ञ** | • 1932 ई. में बसंत पंचमी के पर्व पर जाट सभा का आयोजन किया । इसमें 60 हजार जाट सम्मिलित हुए।<br>• सितम्बर 1933 में पलसाना में जाट सभा का आयोजन किया गया ।<br>• ठाकुर देशराज के निर्देशन में सीकर (पलसाना) में 1934 ई. में 20वीं सदी का सबसे बडे और विराट महायज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें 100 मन घी की आहूति दी गई। इसमें 35 लाख लोगों ने भाग लिया । |
| **खुडी गोली काण्ड** | • 1935 ई. में सीकर के खुडी गाँव में किसानों पर कैप्टन वेब ने लाठीचार्ज करवाया, जिसमें चार किसान मारे गए ।<br>• खुडी कांड का प्रकाशन खण्डवा से प्रकाशित समाचार-पत्र कर्मवीर में हुआ । |

## आन्दोलन के बाद

- जागीरदारों की इन हरकतों से शेखावाटी के किसानों ने सशस्त्र संगठित होकर उनका डटकर मुकाबला किया।
- शेखावाटी जाट किसान पंचायत की तरफ से 9 अक्टूबर, 1934 को जयपुर महाराजा को माँग पत्र प्रेषित किया गया और प्रार्थना की कि जागीरदारों के आतंक से उन्हें मुक्त कराएँ ।
- शेखावाटी के नाजिम ने भी अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार को प्रेषित की।
- नाजिम ने किसानों की शिकायतों की पुष्टि की और उनके समाधान के लिए सुझाव दिया।
- परिणामत: 1936 ई. में ठिकाने में भूमि सर्वेक्षण और भूमि बन्दोबस्त की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, जिससे शेखावाटी व सीकर क्षेत्र में कुछ शान्ति हुई।
- सीकर व शेखावाटी के दीर्घकालीन किसान संघर्ष का अन्त **मार्च, 1947 ई. में जयपुर में हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में लोकप्रिय सरकार के गठन हो जाने के साथ ही हुआ**।
- राजस्व मंत्री टीकाराम पालीवाल ने गैर-खालसा क्षेत्र में भूमि बन्दोबस्त करवाने की व्यवस्था की।

## मारवाड़ में किसान आन्दोलन ( Marwar Kisan Movement )

- जयपुर राज्य के शेखावटी के जाट आन्दोलन का प्रभाव मारवाड़ राज्य के **डीडवाना और सांभर परगनों** तथा शेखावाटी से लगे क्षेत्र के जाटों पर भी पड़ा।
- **1923 - जयनारायण व्यास** ने **'मारवाड़ हितकारिणी सभा'** का गठन किया और किसानों को आन्दोलन करने हेतु प्रेरित किया ।
- परन्तु सरकार ने **'मारवाड़ हितकारीणी सभा'** को **गैर – कानूनी** संस्था घोषित कर दिया।
- सरकार ने किसान आन्दोलन को ध्यान में रखते हुए मारवाड़ किसान सभा नामक संस्था का गठन किया, परन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई।
- अब सरकार ने आन्दोलन का दमन करने हेतु दमन की नीति का सहारा लिया, परन्तु उससे भी कोई लाभ नहीं हुआ।
- मई, 1938 ई. में **मारवाड़ लोक परिषद** की स्थापना हुई।
- मारवाड़ लोक परिषद ने किसानों की माँगों का जोरदार समर्थन किया तथा सरकार की कटु आलोचना की । जागीरदारों ने किसान आन्दोलन के लिए लोक परिषद के नेताओं को उत्तरदायी ठहराया ।।
- इसलिए उन्होंने परिषद के कार्यकर्ताओं के प्रति कड़ाई व पाशविक दृष्टिकोण अपनाया।

## बीकानेर किसान आंदोलन

- सीमा से जुड़े सीकर क्षेत्र और शेखावाटी के जाट आन्दोलनों का बीकानेर राज्य के जाट किसानों पर व्यापक रूप से प्रभाव पड़ा था।
- बीकानेर के अनेक जाट प्रतिनिधियों ने झुँझुँनू में आयोजित अ**खिल भारतीय जाट महासभा के अधिवेशन** में तथा सीकर में 20 से 29 जनवरी, 1934 ई. के विशाल जाट प्रजापति महायज्ञ में सक्रिय रूप से भाग लिया था।
- इन घटनाओं के फलस्वरूप बीकानेर राज्य के जाटों में भी जागीरदारों के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस उत्पन्न हुआ तथा उनमें राजनीतिक चेतना आई।
- उस समय बीकानेर राज्य के **जागीरी क्षेत्र में 37 लागें विद्यमान** थी। किसानों से जागीरदार बेगार लेता था।
- 1937 ई. में **उदरासर के किसानों** ने लाग-बाग के विरुद्ध आवाज उठाई।
- **नेता** - **जग जीवन चौधरी** के आग्रह पर बीकानेर प्रजामंडल ने किसानों की शिकायतें राज्य सरकार के समक्ष रखीं, किंतु इसका कोई परिणाम नहीं निकला।

- बीकानेर किसान आंदोलन को **दो भागों में विभक्त कर** सकते है-
  1. गंगनहर क्षेत्र का कृषक आन्दोलन
  2. जागीर क्षेत्र के कृषकों का आन्दोलन

**चंद्रावल की दुःखद घटना 28 मार्च 1942 ई.**

- 28 मार्च, 1942 ई. का मांगीलाल नामक लोक परिषद् के सदस्य ने उत्तरदायी सरकार दिवस मनाने के लिए आस-पास से सदस्यों को चंद्रावल में आमंत्रित किया। यहाँ के ठाकुर ने उनके आयोजन को न होने दिया और सोजत (पाली) से आने वाले लोगों पर लाठीचार्ज करवाया,
- जिनमें कई व्यक्ति घायल हुए, मिट्ठा लाल मारकण्डेश्वर, विजयशंकर रामसुख, चांदमल, हरिराम आदि के गहरी चोटें लगी और उन्हें जोधपुर के राजकीय अस्पताल में भर्ती कराया गया ।

**डाबडा हत्याकाण्ड (13 मार्च, 1947)**

- शासन की दमनात्मक नीतियों के विरोध में मारवाड़ लोक परिषद और किसान सभा का संयुक्त अधिवेशन 13 मार्च 1947 ई. को डीडवाना के पास डाबडा गाँव (नागौर) में आयोजित हुआ, जिस पर ठिकाने के अनुचरों और जागीरदारों ने हमला कर दिया।
- मथुरादास माथुर डाबड़ा के मुख्य आयोजक थे ।
- लोक परिषद के नेता मथुरादास माथुर, द्वारकादास पुरोहित, राधाकिशन बोहरा, किशनलाल शाह, नरसिंह कच्छवाह, बंशीधर पुरोहित, हरीन्द्र कुमार चौधरी, सी. आर. चौपासनीवाला आदि भाग लेने डाबड़ा पहुँचे, और वे स्थानीय नेता मोतीलाल चौधरी के निवास स्थान पर ठहरे।
- मोतीलाल की माता के पैर काट दिए गए। उनके पिता और भाई को मार दिया गया।
- उनकी पत्नी के मुख को विरूप कर दिया
- मुम्बई से प्रकाशित 'वन्दे मातरम् ' जयपुर के लोकवाणी, जोधपुर के प्रजा सेवक, दिल्ली के हिन्दुस्तान टाइम्स अखबारों ने इस हत्याकाण्ड की घोर निन्दा की ।

**तौल आंदोलन**

- 1920-21 ई० में इस आंदोलन की शुरुआत जोधपुर में चांदमल सुराना ने की । मारवाड़ में 100 तोले का एक सैर होता था लेकिन राज्य सरकार ने ब्रिटिश भारत की तरह 80 तोले का एक सेर कर दिया, जिससे जनता में आक्रोश फैल गया । चाँदमल सुरान ने मारवाड़ सेवा संघ के माध्यम से इसके विरोध में हडताल का आह्वान किया, जिससे सरकार को झुकना पड़ा व नया तौल जारी करने का निर्णय रद्द कर दिया ।

**बीकानेर षड्यंत्र**

- 1931 ई. के दूसरे गोलमेज सम्मेलन लंदन में **महाराजा गंगासिंह** भाग लेने के लिए गये ।
- राजस्थान का एकमात्र राजा महाराजा गंगासिंह था, जिसने 1930, 1931, 1932 के लंदन में हुए तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया था ।
- बीकानेर रियासत के **चंदनमल बहड़** ने महाराजा गंगासिंह की विरोधी नीतियों को **बीकानेर दिग्दर्शन पत्रिका** में छापा । अत: महाराजा गंगासिंह को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इन विरोधी नीतियों के छपने पर नीचा देखना पड़ा ।
- इसके पश्चात **चंदनमल बहड़ पर झूठा मुकदमा** चलाया गया और उन्हें कठोर सजा दी गई ।
- इस घटना को **बीकानेर षड्यंत्र** के नाम से जाना जाता है ।

**दूधवा-खारा किसान आन्दोलन** (जून 1945)

- दूधवा- खारा वर्तमान में चूरू जिले में स्थित है ।
- **प्रमुख नेता -** हनुमानसिंह ठाकुर , मेधाराम वैध , बहन खेतुबाई
- कारण- ठाकुर सूरजमल सिंह के द्वारा किये जा रहे अत्यचार के कारण ।
- किसान नेता हनुमानसिंह ने ठाकुर द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई।
- वह पहले भादरा में महाराजा शार्दूलसिंह से मिला और बाद में अनेक साथियों के साथ वह महाराजा से मिलने माउण्ट आबू पहुँचा । लौटते समय रतनगढ़ में उसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया (जून, 1945 ई.) ।
- हनुमानसिंह पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उसे पाँच वर्ष का कारावास दिया गया।
- यद्यपि दूधवा -खारा किसान आन्दोलन सफल नहीं रहा, तथापि इससे राजनीतिक चेतना का संचार हुआ। किसानों में आत्मविश्वास जाग्रत हुआ । वे अब अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाने लगे थे।|

**रायसिंह नगर की घटना (जुलाई 1946)**

- 30 जून से 1 जुलाई, 1946 ई. को प्रजा परिषद ने **रायसिंहनगर में एक राजनीतिक सभा का** आयोजन किया।
- इस सभा पर पुलिस ने लाठियों से आक्रमण किया, जिससे अनेक कार्यकर्ता घायल हुए।
- उग्र भीड़ ने राजकीय विश्राम गृह को घेर लिया। भीड़ को हटाने के लिए पुलिस ने गोलियाँ चलाई जिसके परिणामस्वरूप **बीरबलसिंह मारा** गया।
- **अखिल भारतीय देशी रियासत परिषद की ओर से हीरालाल शास्त्री, गोकुलभाई भट्ट और बीकानेर के रघुवरदयाल गोयल ने** रायसिंहनगर कांड की समीक्षा की।
- हनुमानगढ़ में नियुक्त मुंसिफ मजिस्ट्रेट हरदतसिंह चौधरी ने राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। उसने प्रजा परिषद की सदस्यता स्वीकार कर ली ।
- प्रजा परिषद् ने **17 जुलाई, 1946** ई. को संपूर्ण बीकानेर राज्य में किसान दिवस मनाया गया ।
- **3 सितम्बर, 1946 ई. के गोगामेडी गाँव में एक विशाल किसान सभा का** आयोजन किया गया था, जहाँ जागीर प्रथा के उन्मूलन के लिए नारा बुलन्द किया गया।

**कांगड़ा काण्ड अक्टूम्बर 1946**

- बीकानेर के किसान आंदोलन के इतिहास की अंतिम महत्वपूर्ण घटना 1946 ई. का कांगड़ काण्डा थी ।
- बीकानेर की रतनगढ़ तहसील के कांगड़ा गाँव के जागीरदार ने 1946 ई. में अकाल के बावजूद किसानों से कर वसूली का प्रयास किया, जिसके विरूद्ध किसानों ने सफल आंदोलन किया ।

## राजस्थान के किसान आन्दोलनों का मूल्यांकन